वेदान्त मिशन की मासिक ई - पत्रिका

वेदान्त पीयूष

वर्ष २३ नवम्बर - २०२३ प्रकाशन - ११

सम्पादिका :

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

वेदान्त पीयूष

नवम्बर २०२३

प्रकाशक

वेदान्त आश्रम,

ई - २९४८, सुदामा नगर

इन्दौर - ४५२००९

Web : https://www.vmission.org.in

email : vmission@gmail.com

वेदान्त पीयूष

विषय सूचि

1,	श्लोक	05
2.	पू. गुरुजी का संदेश	06
3.	वाक्यवृत्ति	10
4.	गीता और मानवजीवन	16
5.	जीवन्मुक्त	22
6.	मनु और दशरथ चरित्र	26
7.	कथा	30
8.	मिशन-आश्रम समाचार	32
9.	आगामी कार्यक्रम	48
10.	इण्टरनेट समाचार	51
11	लिन्क	52

नवम्बर 2023

रज्जुसर्पवदात्मानं जीवो ज्ञात्वा भयं वहेत्।
नाहं जीवः परात्मेति ज्ञातश्चेन्निर्भयो भवेत्॥

(श्लोक - २७)

आत्मा को जीव मानने से व्यक्ति उसी प्रकार से भयभीत होता है, जैसे रस्सी को सांप समझने से। जब व्यक्ति यह जान लेता है कि हम जीव नहीं है, किन्तु परमात्मा ही है, उसी समय वह समस्त भय से मुक्त हो जाता है।

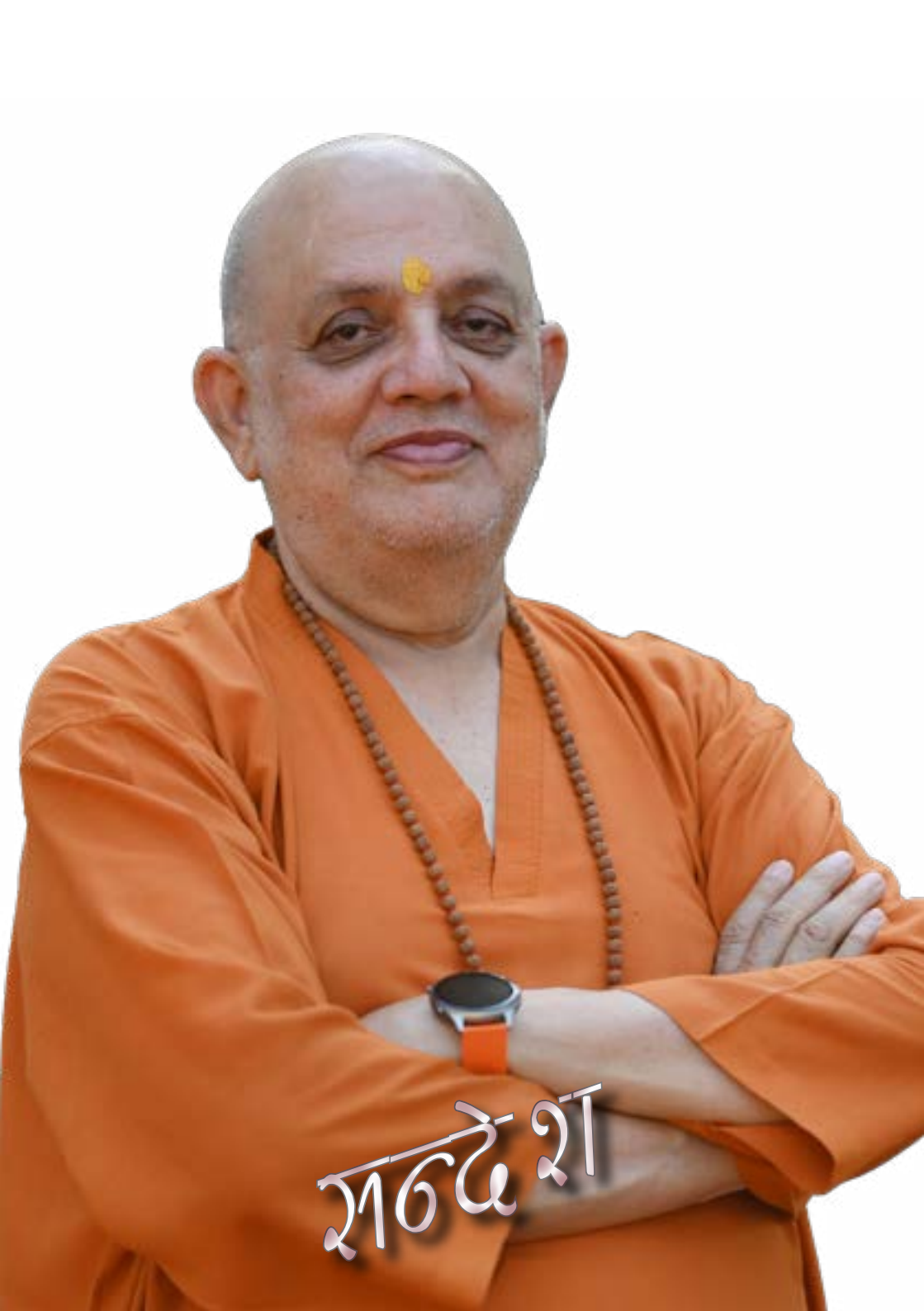
सन्देश

स्थितप्रज्ञ

पूर्वांक में स्थितप्रज्ञ के बारे में देखा कि जिसकी अपने आपमें अपने आपसे सन्तुष्ट होने की वजह से समस्त कामनाएं समाप्त हो चुकी है, वह स्थितप्रज्ञ है। उनकी सन्तुष्टि का हेतु भी किसी बाह्य अनुकुलता की प्राप्ति नहीं है, किन्तु अपनी अखण्डता, पूर्णस्वरूपता में जाग्रति है। इसलिए उनकी सन्तुष्टि किसी देश, कालादि से सीमित - वस्तु, व्यक्ति वा परिस्थिति पर आश्रित नहीं है।

साधारणतः जब बाहर अनुकुलता की वजह से व्यक्ति सन्तुष्ट होता है, तो उस आनन्द की अवस्था का रसास्वादन करने लगता है और उस प्रक्रिया में वह निष्क्रिय हो जाता है। उसके लिए अनुकुलता सुख का और प्रतिकुलता दुःख का पर्याय होती है। अतः उन-उन वस्तु, व्यक्ति वा परिस्थिति के प्रति राग द्वेष

से युक्त प्रतिक्रियाएं होती है। विविध परिस्थिति में अनुकुलता में हर्षित होता है तथा उसे बनाए रखने की आकांक्षा व चेष्टा से युक्त होता है। क्योंकि सुखप्राप्ति हेतु वह उसी परिस्थिति विशेष पर निर्भर रहता है। जिन वस्तु, व्यक्ति वा परिस्थिति पर आश्रित होता है, वह स्वभावतः नश्वर, अस्थायी होने से उसके खोने का सतत भय बना रहता है। प्रतिकुलता की प्राप्ति में जो हेतु होता है, उसके प्रति क्रोध व द्वेष से युक्त होता है। एवं इन दोनों अनुकुलता-प्रतिकुलता रूप परिस्थिति में वह आकांक्षी व उद्विग्नता से युक्त रहता है।

इन विविध प्रतिक्रियाओं के पीछे हेतु कोई बाह्य परिस्थिति आदि नहीं है, किन्तु उनकी स्वकेन्द्रिता व बाह्य विषय के प्रति शोभनत्व का अध्यासमात्र है। उसकी भी गहराई में जाकर देखें तो स्वकेन्द्रिता का हेतु अज्ञानवशात् अपने बारे में क्षुद्रता की धारणा तथा बाह्य पदार्थ के प्रति सत्यता की बुद्धि है, जिसे क्षूद्रता की निवृत्ति का हेतु मानकर जीता है। ज्ञानवान निष्क्रिय नहीं होता है, किन्तु इसी जगत में, यथोचित व्यवहार करता हुआ भी प्रतीत होता है। जगत के साथ व्यवहार करने पर स्वाभाविक ही विविध सुखादि के पर्यायरूप उतार-चड़ाव का अनुभव होता है, तथापि उनमें अज्ञानी के समान प्रतिक्रियाएं नहीं

होती है। हमारे अपने बारे में तथा जगत के बारे में निश्चय ही विविध प्रतिक्रियाओं का हेतु होते है। संसारी व्यक्ति के अज्ञानवशात् अप्रामाणिक निश्चय की वजह से उसे अपने बारे में क्षूद्रता की धारणा ही स्वकेन्द्रित जीवन जीने को विवश करती है। स्थितप्रज्ञ के प्रामाणिक ज्ञान का आश्रय लेने की वजह उनके समस्त अज्ञानज धारणाओं को समाप्त हो गए है। वह यथार्थ में जीता है। उनके समस्त निश्चय प्रामाणिक होने की वजह क्षूद्रता आदि रूप धारणाओं से रहित है। अतः उनमें न उद्वेग, न आकांक्षाएं होती है और नहीं राग-द्वेष, भय, क्रोधादि रूप प्रतिक्रियाएं होती है।

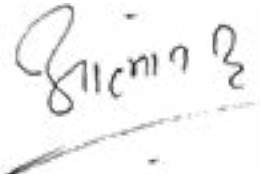

आदि शंकराचार्य

द्वारा

विरचित

वाक्यवृत्ति

स्वामिनी अमितानन्द

यस्य प्रसादादहमेव विष्णुः मयि-एव सर्वं परिकल्पितं च।
इत्थं विजानामि सदात्मरूपं तस्यान्घ्रि पद्मं प्रणतोऽस्मि नित्यम्।।

श्लोक – 04

अनायासेन येनास्मान्
मुच्येयं भवबन्धनात्।
तन्मे संक्षिप्य भगवन्
केवलं कृपया वद।।

हे भगवन्! कृपया हमें संक्षेप में यह बताएं जिससे कि अनायास ही हम भवबन्धन से मुक्त हो जाएं।

वाक्यवृत्ति

एक शमादि साधनसम्पन्न, जिज्ञासु शिष्य ब्रह्मविद्या के आचार्य के पास ज्ञान हेतु उपसदन करता है, और अपनी जिज्ञासा को गुरु के समक्ष रखता है। इसे यहां बताने के द्वारा आचार्य बताते हैं कि किसी श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ आचार्य के पास किस प्रयोजन से जाना चाहिए तथा ब्रह्मविद्या के जिज्ञासु की मनोस्थिति कैसी होनी चाहिए उसे स्पष्ट करते हैं।

शिष्य गुरु के प्रति शरणागत होकर बताता है कि, 'अनायासेन येन अस्मात् भवबन्धनात् मुच्येयं' – अर्थात् हम जिस प्रकार से अनायास ही भवबन्धन से मुक्त हो जाएं.....। शिष्य के इन वचनों से उनमें भवबन्धन अर्थात् संसार सागर से छूटने की तीव्र आकांक्षा दीखती है। भवबन्धन समस्या का स्वरूप दीखाता है। 'भव' अर्थात् बनना। हर व्यक्ति कुछ न कुछ बनने की चेष्टा करता है। उसका कारण वर्तमान स्थिति की स्वीकृति नहीं है, क्योंकि अपने अन्दर कमी अर्थात् अपूर्णता का एहसास है। हम

अपूर्ण है, कमी से युक्त है और हमें पूर्ण होना है, कमी को दूर करना है। अपूर्णता को दूर करने की इच्छा मन में अशान्ति और विक्षेप उत्पन्न करते है। उसे दूर करके परं शान्ति पाना चाहते है। एवं सतत कुछ न कुछ प्राप्ति वा परिवर्तन की इच्छा ही भवबन्धन है। यही चेष्टा जन्म-जन्मान्तर से करते आए है, किन्तु अनन्त-अनन्त चेष्टा के बावजूद भी उससे मुक्ति नहीं हो पाई है।

यद्यपि यह सार्वभौम समस्या है। क्योंकि प्रत्येक जीव इसी समस्या से ग्रसित होकर जन्मान्तर की यात्रा करके संसार के संताप अनुभव करता है। तथापि अन्य संसारी से यह शिष्य विलक्षण - एक जिज्ञासु की श्रेणी में आता है। उसकी जिज्ञासा कि अनायोस येन अस्मात्..... यही उसे विलक्षण बनाता है। आयास से अभिप्राय है कर्म। जब भी किसी कमी का अनुभव होता है तो उसे बाह्य किसी विषयादि की इच्छा से प्रेरित होकर, उसकी सिद्धि हेतु कर्म में प्रेरित होते है। हमारी कर्म की प्रेरणा

ही यह दिखाती है कि हमें यह ज्ञात है कि हमारी कमी कैसे दूर होगी? और उसके लिए साधन कर्म ही है। अर्थात् कर्म के प्रति अत्यधिक विश्वास है। यह निश्चय ही दीखाता है कि सूक्ष्मता के अभाव में तथा अपनी समझ के अभिमान की वजह से समस्या पर विचार किया ही नहीं है। अतः उसके कर्म क्रिया नहीं किन्तु प्रतिक्रियारूप है।

इस शिष्य ने विचार करके अपनी समस्या के स्वरूप को समझा, अपने आज तक के जीवन और विविध अनुभूतियों की समीक्षा की है और यह निष्कर्ष पर पहुंचा है कि हमने आज तक विविध वस्तु आदि को प्राप्त करके अपनी कमियों को दूर करके पूर्णता की अनुभूति प्राप्त की है, किन्तु यह सब अस्थायी, नश्वर सिद्ध हुई है। यदि यह नश्वर है तो वह पूर्ण कैसे हो सकता है? अर्थात् कर्मजनित व अपने आयास से कभी भी मुक्ति वा पूर्णता की प्राप्ति सम्भव नहीं है। कर्म व कर्मजनित की सीमाओं ज्ञान होना ही विनम्र साधक, जिज्ञासु बनाता है। उनमें ज्ञान से ही मुक्ति का निश्चय उसे संन्यस्त करता है। ज्ञान के प्रति मून्य स्थापित होने पर गुरु के चरणों में पूर्णतया शरणागति व श्रवण की उपलब्धता हो पाती है। ऐसा शिष्य गुरु के श्रीचरणों में भवबन्धन से मुक्ति के लिए निवेदन करता है।

I finally realized that people are prisoners of their phones... that's why it's called a "cell" phone.

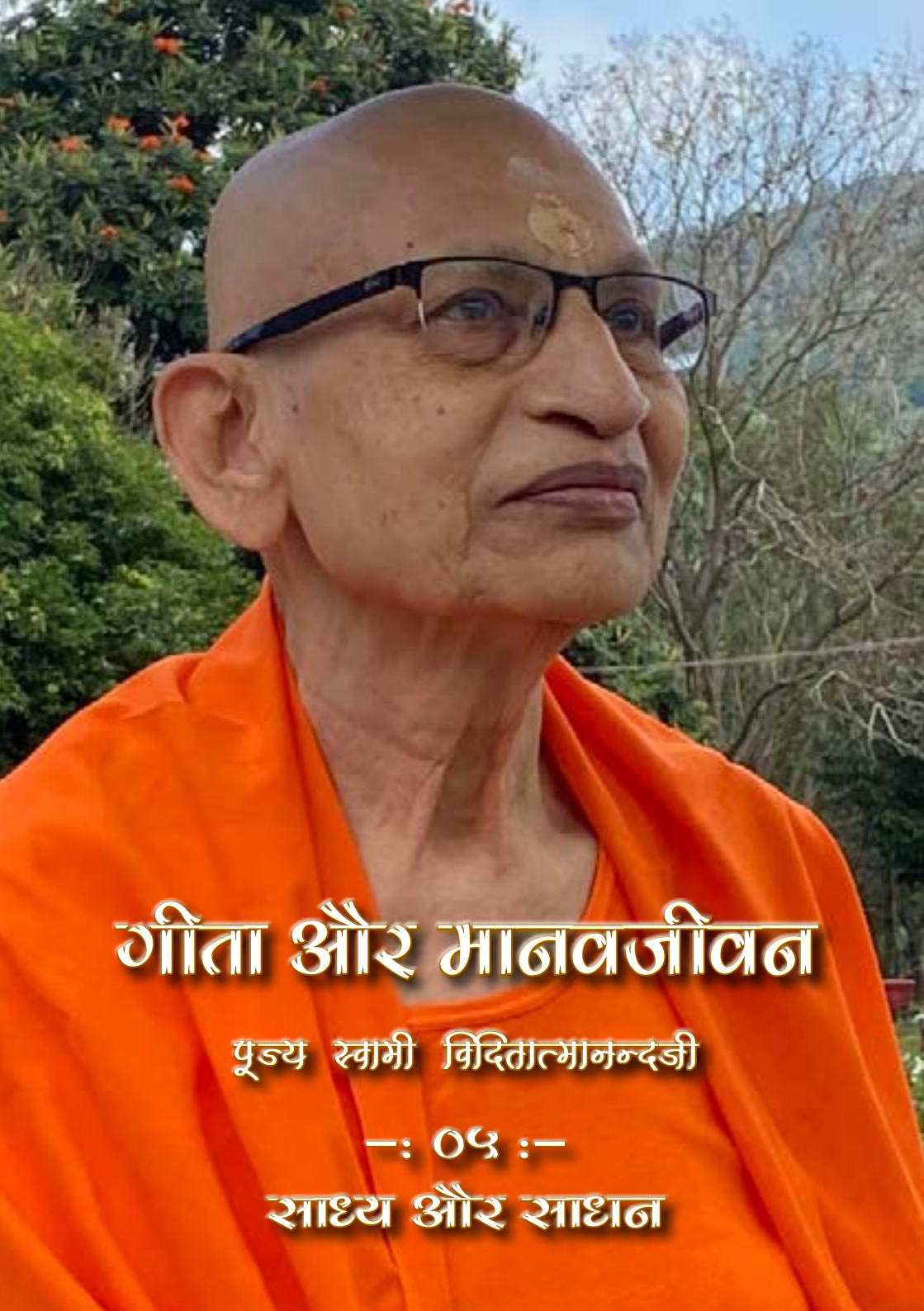

गीता और मानवजीवन

पूज्य स्वामी विदितात्मानन्दजी

—: ०५ :—

साध्य और साधन

गीता और मानवजीवन

भगवान कृष्ण भगवद्गीता में बताते हैं कि, 'वासुदेवः सर्वम्' अर्थात् सब वासुदेव है। सर्व वासु भी है और देव भी। वासु अर्थात् जो सब के हृदय में निवास करते हैं और वह देव भी है अर्थात् स्वयंप्रकाश है। सर्व वस्तु 'है' 'भासित होती है' और 'प्रिय है'। यह होना, भासित होना और प्रिय होना अर्थात् अस्ति, भाति और प्रिय – सत्, चित् और आनन्द ही वासुदेव है, नारायण है, शिव है, परमात्मा है, चिदानन्द है, ब्रह्म है। जड़, चेतन – इस जगत में जो कुछ भी है, उनका मूलभूत सामान्य धर्म है। भगवान सातवें अध्याय में बताते हैं, 'मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव।' जिस प्रकार किसी माला के फूल किसी सूत्र से, धागे से जुड़े है, वैसे ही यह सर्व जगत मुझमें पिरोया है, मैं सूत्र हूं, जो प्रत्येक नाम-रूप को जोड़ता और आधार प्रदान करता तत्त्व है'। इस ज्ञान को देना भगवद्गीता का मूलभूत विषय है। क्योंकि यह ज्ञान प्राप्त हो तो ही हमारा जीवन सही अर्थ में सफल होगा। यह है अन्तिम धर्म, जिसे हम ध्येय या साध्य कहते हैं।

गीता और मानवजीवन

इसके अलावा, इस ध्येय प्राप्त करनेके साधन को भी धर्म कहते है। अन्तिम धर्म, ध्येय कैसे प्राप्त करना? यह ज्ञान कैसे प्राप्त करना? अपने जीवन का किस तरह निर्माण करना, जिससे कि जीवन इस ज्ञान प्राप्ति के योग्य बने? अपने व्यक्तित्व का कैसे निर्माण करें, जिससे कि अपने ज्ञान में निष्ठा प्राप्त कर सकें? और इस तरह, अपना जो मूलभूत धर्म है, उसमें निष्ठ रहकर उसके आनन्द, अपने स्वरूपभूत आनन्द को किस तरह अनुभव कर सके? जिससे कि बाहर सुख की भीख नहीं मांगनी पडे, न किसीके प्रति आश्रित रहना पडे? इसे साधन या धर्म भी कहा जाता है। यह साधनधर्म है और सत्, चित्, आनन्द वह साध्यधर्म। भगवद्गीता साध्यधर्म और साधनधर्म दोनों का ज्ञान देती है। 'इति श्रीमद्भगवद्गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे...' भगवद्गीता में दोनों है, ब्रह्मविद्या और योगशास्त्र। ब्रह्म अर्थात् सच्चिदानन्द परमात्मा जिसका विषय है - उसका नाम है ब्रह्मविद्या; जो कि साध्य है। और उस विद्या को प्राप्त करने का जो साधन, मार्ग है; वह है योगशास्त्र - साधनविद्या। मनुष्य के जीवन में यह दोनों वस्तु होनी चाहिए। तो ही मानवजीवन सम्पूर्ण होता है।

गीता और मानवजीवन

जीवन में सद्‌गुण और सदाचार यह साधन है जो अपने अन्तिम ध्येय की, सच्चिदानन्द की प्राप्ति कराने में सहायक होता है। हम सामान्यतः ऐसा मानते है कि अनुकम्पा, दया, करुणा, सेवा, समर्पण, स्नेह, प्रेम – इसका नाम इन्सानियत है। यह बात सत्य है, किन्तु मनुष्य के लिए इन्सानियत से भी कुछ अधिक है, उसे नहीं भूलना चाहिए। मनुष्य का अन्तिम मूलभूत धर्म है – सत्, चित्, आनन्द; उसका ज्ञान प्राप्त करना, उसमें निष्ठा प्राप्त करना। साधन तब ही फलीभूत होता है, जब वह साध्य में पर्यवसित हो। अतः साध्य को ध्यान में रखे बगैर साधन की बात करें तो साधन की सच्ची समझ हम कभी भी प्राप्त नहीं कर सकते है।

सद्‌गुण और सदाचार क्या होने मात्र के लिए होने चाहिए या किसी अन्य कारण से? सद्‌गुण, सदाचार यह जो दैवी सम्पत्ति है, उस सम्पत्ति का भी कुछ कारण है। दैवी सम्पद्वि मोक्षाय निबन्धायासुरी मता। भगवान् गीता में

गीता और मानवजीवन

कहते हैं कि दैवी सम्पत्ति – जैसे कि त्याग, क्षमा, करुणा इत्यादि मोक्ष के लिए है। और इसलिए सामान्य मनुष्य के लिए दैवी सम्पत्ति की प्राप्ति प्रथम धर्म बन जाता है। किन्तु कोई यह पूछे कि 'मुझे सत्य क्यों बोलना चाहिए? उससे क्या मिलेगा? क्यों नीतिवान् बनना चाहिए? नैतिकता किस चीज के लिए है? सेवा क्या सेवा के लिए ही है? तो उसका उत्तर है 'ना'। यह सब सद्गुण किसी अन्य हेतु के लिए है। यह हेतु अर्थात् आत्मज्ञानरूपी धर्म भी हमें जानना चाहिए, तब ही व्यावहारिक धर्म का उचित स्थान हम समझ पाएंगे। इसलिए गीता में दो प्रकार के धर्म का ज्ञान दिया गया हैं।

जीवन्मुक्त

— ३९ —

गंगोत्री

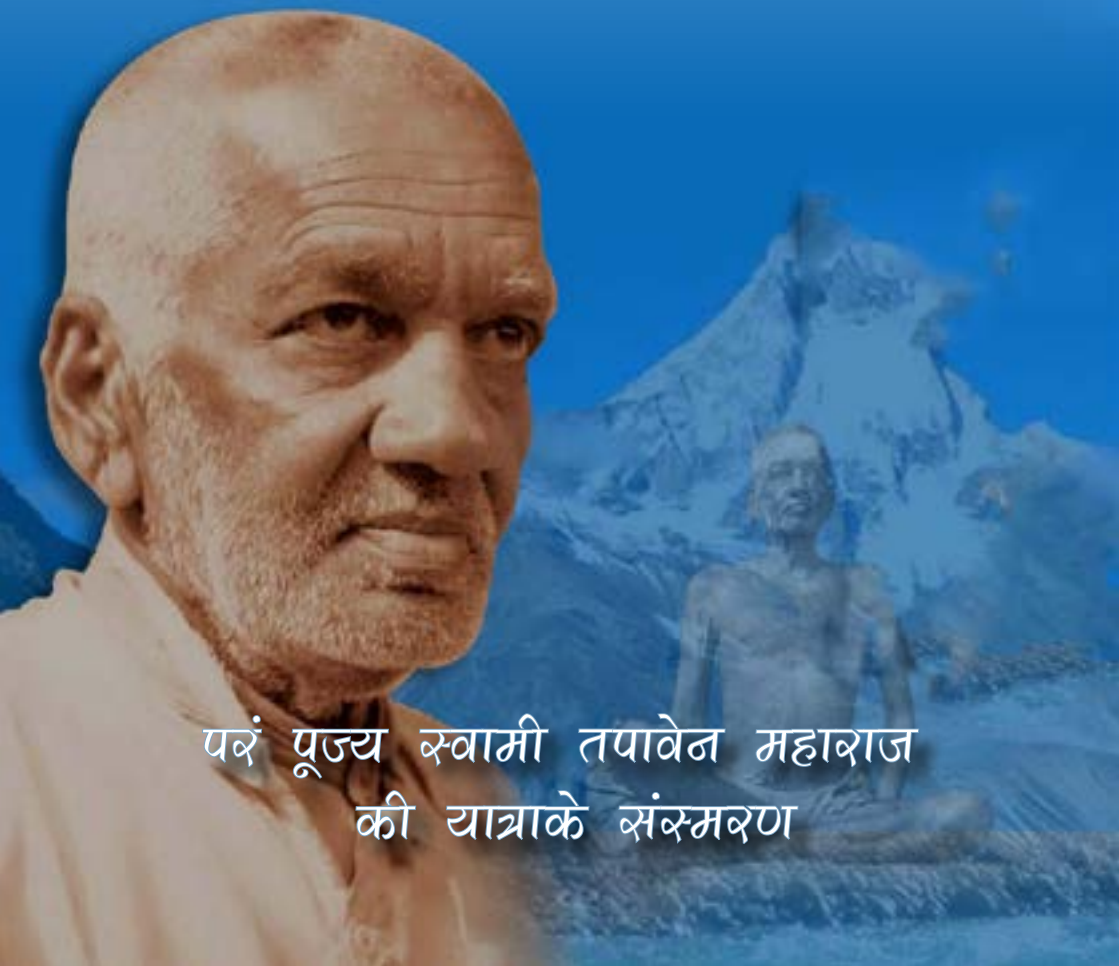

परं पूज्य स्वामी तपावेन महाराज
की यात्राके संस्मरण

जीवन्मुक्त

तत्र वर्ष सहस्त्रैश्च समाराध्य पुनः पुनः।
ब्रह्माणं शंकरं जह्नु भुवि गंगामयोजयत्।। (वासिष्ठम्)

हजारों वर्षो तक ब्रह्मा, शंकर तथा जह्नु महर्षि का बार बार तप करके भगीरथ ने भूमि पर गंगाजी का अवतरण कराया था।

इस प्रकार भारत-सम्राट श्री भगीरथ हजारों वर्षोतक हिमालय में तप करके भगीरथ स्वर्गगंगा को स्वर्गलोक से मर्त्यलोक में लाये थे। कुछ लोग पुराणों में वर्णित इस प्रसिद्ध आख्यान को अर्थवाद के रूप में ग्रहण करते है।

इसके विपरीत दूसरे लोग इसे यथार्थरूप में स्वीकार करने में कोई अनुपपत्ति नहीं मानते। यदि व्यवहारकुशल तथा बुधजन ऐसी कहानियों को यथाश्रुत अर्थ में स्वीकार न करे तो उन पर हमें

आक्षेप नहीं करना चाहिए। पुराण की उन गाथाओं को, जो हमारे दैनिक जीवन से मेल नहीं खाती, प्रत्येक व्यक्ति स्वीकार भी नहीं कर सकता। हमारे पुराने आचार्यो ने भी इन्हें यथावत् स्वीकार करने का उपदेश नहीं दिया। अतः नवीन विद्वानों का यह विचार है कि इस प्रकार की गाथाएं गंगा की पवित्रता में श्रद्धा उत्पन्न करने के लिए प्रस्तुत की गयी है। किन्तु प्राचीन गाथाओं में विश्वास रखने वाले लोग आधुनिक विद्वानों के इस आशय का खंडन करते है। फिर भी इस बात में तो दोनों पक्ष सहमत हैं कि भगीरथ के साथ कितना बड़ा सम्बन्ध था, जो गंगा के लिए हिमालय में दीर्घकाल तक तपस्या करते रहें। गंगा-विषयक इस समानता को स्वीकार करते हुए भी इन दोनों प्रकार के विचारकों में पर्याप्त मतभेद है।

परन्तु मैं इस आलोचना विवाद में प्रवेश करना नहीं चाहता। शिव! शिव! आलोचना तो अथाह सागर के समान है। आलोचना के पारावार में उतर जाने पर फिर उसके किनारे आ लगना असंभव होता है। हे गंगे! हे भागीरथी! हे जगज्जननी! मैं आप का भक्त हूं। आपकी समालोचना करने में असमर्थ हूं। साक्षात् परमेश्वरी के रूप में मैं आपके दर्शन कर रहा हूं। प्रिय माता के रूप में मैं आपका आलोचक नहीं हूं। आपकी समालोचना करने में मैं असमर्थ हूं। साक्षात् परमेश्वरी के रूप में मै आपके दर्शन कर रहा हूं। प्रिय माता के

रूप में मैं आपका भजन कर रहा हूं। चाहे सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्मा ने आपकी सृष्टि की हो, अथवा उसके बाद भगीरथ ने ही सृष्टि की हो। यह जान लेने से मेरे लिए कोई लाभ या हानि नहीं हो सकती। चाहे आप विष्णु के चरणों से निकलकर, महादेव की जटा से होकर भूमि में प्रवाहित होती रहें, या हिमालय के शिखर से निकलकर हिम धाराओं से भूमि में बहती रहें, मेरी आंखो तथा मेरी बुद्धि के लिए आप साक्षात् परमेश्वरी बन कर सतत प्रकाशमान रहेंगी। एक मातृभक्त पुत्र के लिए माता या मातृमहिमा की कौन सी आलोचना रह जाती है? मैं आप जगज्जननी का अनन्य भक्त हूं। अतः मेरे लिए आप या आपकी महिमा की समालोचना करने की क्या जरुरत है? हे देवी! आप मुझे शान्ति दीजिएं कि मैं आपके चरणारविन्दों की भक्ति किसी विकल्प या आलोचना के बिना कर सकूं। हे पतित पावनी! हे जननी! पापी और पतित सभी का उद्धार करते हुए आप सर्वदा, सर्वोत्कर्षेण, इस संसार में विराजती रहें।

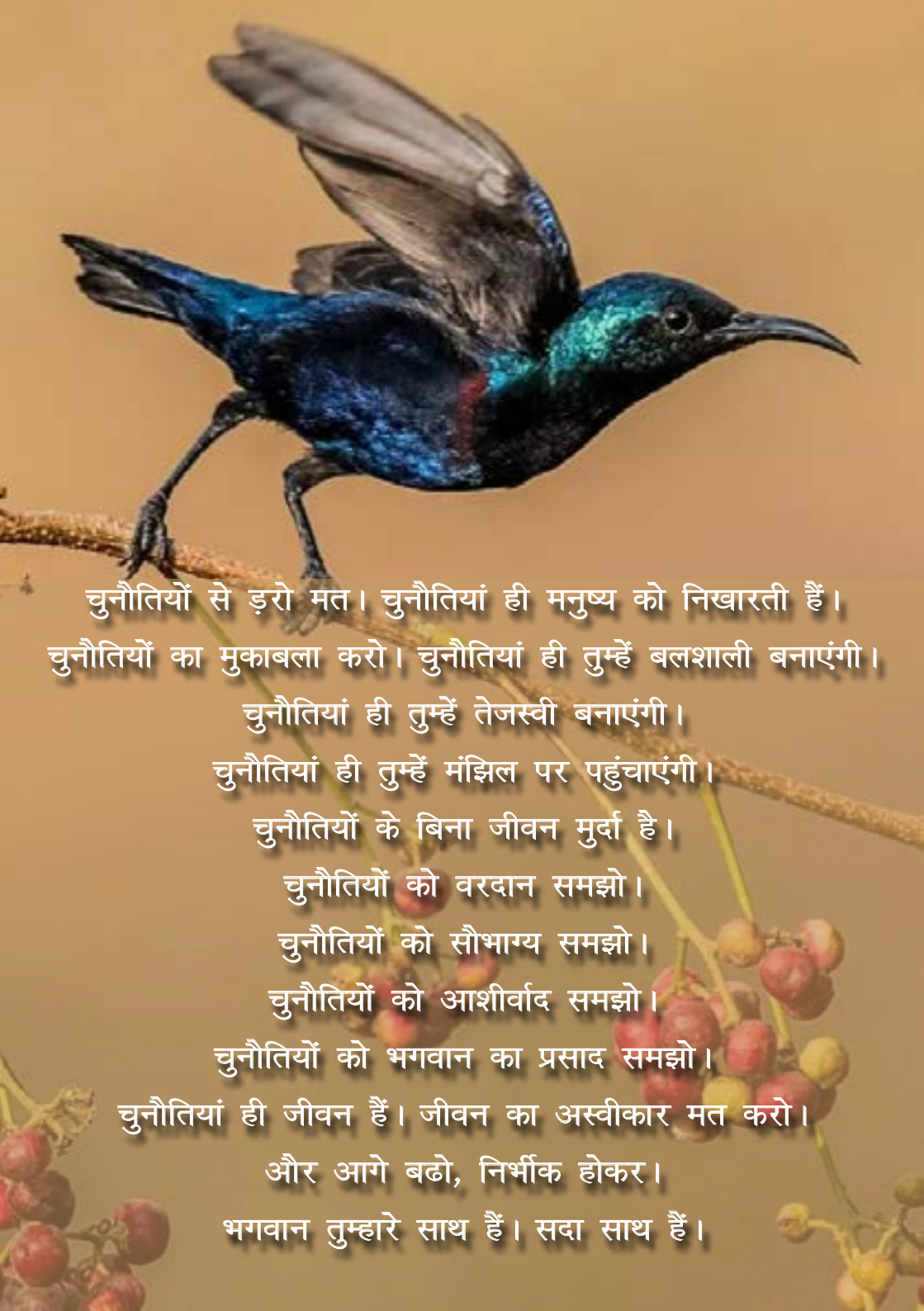

चुनौतियों से ड़रो मत। चुनौतियां ही मनुष्य को निखारती हैं।
चुनौतियों का मुकाबला करो। चुनौतियां ही तुम्हें बलशाली बनाएंगी।
चुनौतियां ही तुम्हें तेजस्वी बनाएंगी।
चुनौतियां ही तुम्हें मंझिल पर पहुंचाएंगी।
चुनौतियों के बिना जीवन मुर्दा है।
चुनौतियों को वरदान समझो।
चुनौतियों को सौभाग्य समझो।
चुनौतियों को आशीर्वाद समझो।
चुनौतियों को भगवान का प्रसाद समझो।
चुनौतियां ही जीवन हैं। जीवन का अस्वीकार मत करो।
और आगे बढो, निर्भीक होकर।
भगवान तुम्हारे साथ हैं। सदा साथ हैं।

(श्री रामचरित मानस पर आधारित)

श्री मनु और दशरथ चरित्र

— ०८ —

धर्म तें बिरति जोग तें ग्याना।
ग्यान मोच्छप्रद बेद बखाना।।

मनु और दशरथ चरित्र

कैकेयीपुत्र भरत को युवराज बनाने के षड़यंन्त्र में महाराज दशरथ का व्यवहार एक चतुर राजनीतिज्ञ क भांति नहीं था। दशरथ के स्वभाव में एक राजनीतिज्ञ की चतुराई के स्थान पर भक्त की सरलता का अधिक दर्शन होता है। उनके विषय में समाज में भी यही धारणा प्रचलित थी। 'सरल सुसील धर्मरत राऊ' कहकर श्री भरत ने इसी भावना को अभिव्यक्ति दी है। इसीलिए वे राज्याभिषेक की पूर्व सन्ध्या को कैकेयी के महल में बिताने का निर्णय करते हैं। उनके अन्तःकरण में यह प्रगाढ़ विश्वास था कि इस समाचार को सुनकर कैकेयी आनन्दित होगी। किसी प्रकार का भय अथवा संशय उनके मन में था ही नहीं। महल में पहुंचते ही उन्हें कैकेयी के कोपभवन में होने का समाचार प्राप्त होता है। यह समाचार उन्हें जिस प्रकार आतंकित

कर देता है – उससे उनके चरित्र की दुर्बलता का वह अंश सामने आ जाता है, जो पूर्व-पूर्व जन्मों के उनके अन्तःकरण में विद्यमान था। कठिन तपस्या और साधना के बाद भी वे अपनी रागात्मिका वृत्ति पर विजय प्राप्त करने में सफल नहीं हुए। महान् रामभक्त के रूप में उन्हें ख्याति प्राप्त थी किन्तु उनके अन्तःकरण में राम के साथ काम भी विद्यमान था। इसे छिपाने का कोई प्रयास गोस्वामीजी ने नहीं किया है। प्रस्तुत प्रसंग में खरे शब्दों में उनकी आलोचना की गई है।

यों तो गोस्वामीजी ने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है कि राम और काम की एक ही स्थान पर उपस्थिति उसी प्रकार सम्भव नहीं है जिस प्रकार प्रकाश और अन्धकार का साहचर्य। किन्तु महाराज श्री के प्रसंग में इस सिद्धान्त की पुष्टि नहीं होती है। उसे एक व्यावहारिक दृष्टान्त के माध्यम से हृदयंगम किया जा सकता है। एक विशाल भवन में सूर्योदय के पश्चात् प्रकाश फैल जाता है किन्तु उसी भवन के नीचे यदि तलघर का निर्माण कर दिया गया हो तो मध्याह्न के प्रखर प्रकाश में भी वहां अन्धकार छाया रह सकता है। महाराज श्री के अन्तःकरण

मनु और दशरथ चरित्र

की तुलना भी इसी प्रकार के भवन से की जा सकती है। उनके हृदय भवन में राम-प्रेम का प्रकाश फैला हुआ है किन्तु उसके नीचे वासना का एक ऐसा कक्ष भी है – जहां ममत्व का अन्धकार व्याप्त है। इस तरह वहां अन्धकार और प्रकाश की एकत्र स्थिति दिखाई देती है। साधना की भाषा में इसे यों भी कह सकते हैं कि उन्होंने ईश्वर को शास्ता के रूप में हृदय में आमन्त्रित नहीं किया था। मनु के रूप में साधना करने के पश्चात् भी वे प्रभु से इस वरदान की याचना नहीं करते है कि उनके अन्तकरण की वासना विनष्ट कर दिया जाय।

पौराणिक गाथा

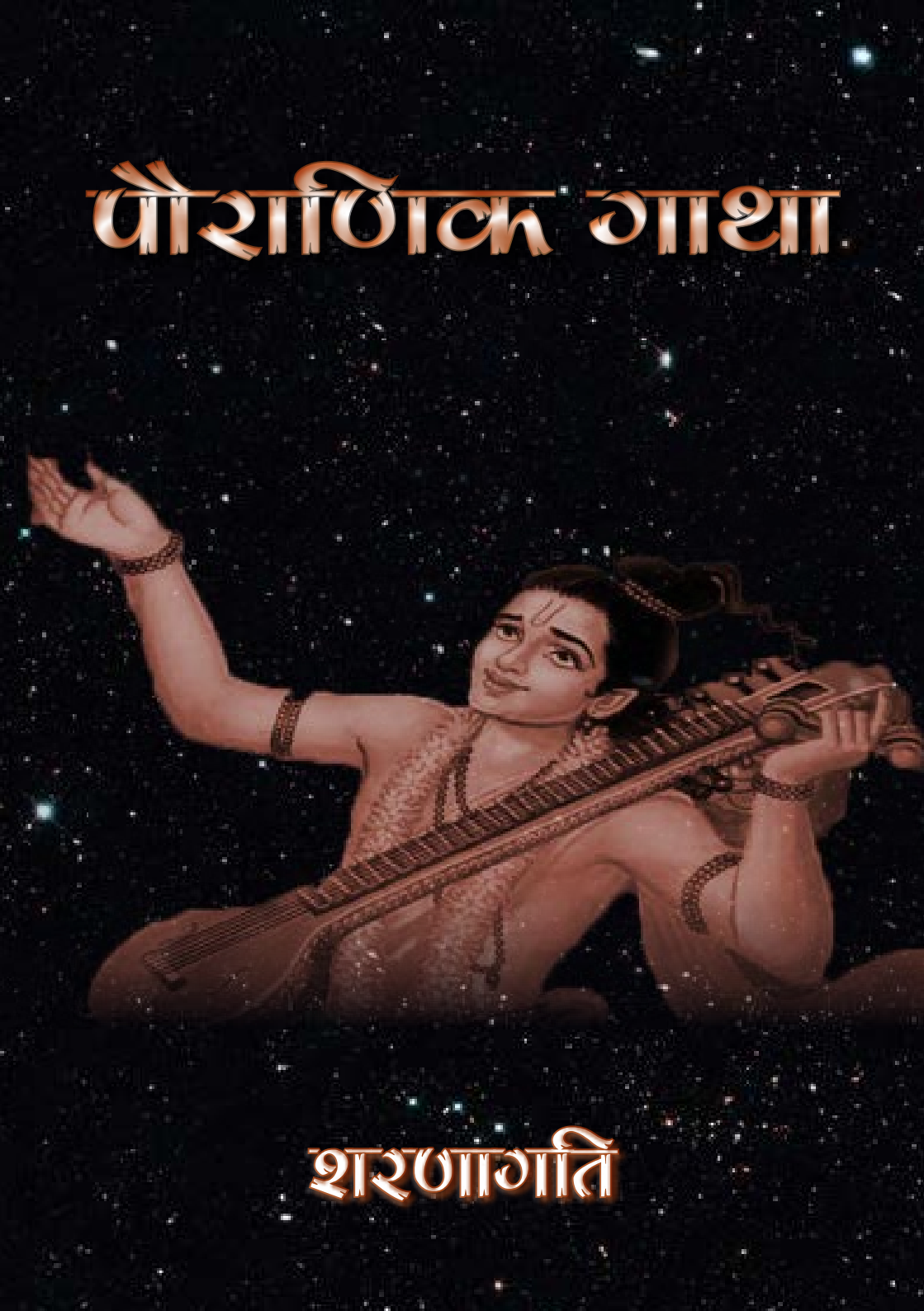

शरणागति

शरणागति

एक तालाब में दो मछलियां रहती थी। उसमें से एक बलशाली थी तथा उसे अपने बल पर बहुत अभिमान था। दूसरी कमज़ोर किन्तु बुद्धिमान थी और साथ साथ विनम्र थी।

एक बार एक मछुआरे ने तालाब में जाल फैलाया। बलवान मछली जाल से बचने के लिये तेज़ी से भागने लगी। यह सोचने लगी कि हम तो समर्थ हैं, इसलिए इस जाल से दूर भागकर आराम से बच जाएंगे। किन्तु जैसे जैसे वह भागने लगी, वैसे वैसे मछुआरा अपनी जाल को और भी फैलाता गया। अन्ततः वह जाल में फंस गई।

दूसरी तरफ कमज़ोर मछली भागने में समर्थ नहीं थी। वह भगवान से मन ही मन प्रार्थना करने लगी। उसी समय उसे सत्प्रेरणा हुई। उसने सोचा कि मछुआरा अपने पैर को कभी जाल में नहीं फँसायेगा। यह सोच कर वह मछुआरे के पैर के आसपास ही घूमने लगी। थोड़ी ही देर में बलवान मछली जाल में फँस गई और कमजोर किन्तु विनम्र मछली बच गई। वह मन ही मन भगवान को धन्यवाद देने लगी। इसको कहते है शरणागति। ऐसे ही ईश्वर के प्रति शरणागत को कभी माया नहीं बांधती।

Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Pujan of the Paduka of P.P. Gurudev

आश्रम / मिशन समाचार

On the occasion of Sanyas Deeksha Day

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Om Sri Gurubhyo Namah

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Bhajans by one & all - seniors & juniors

आश्रम / मिशन समाचार

Ashtami Pujan - of Durga Mataji

आश्रम / मिशन समाचार

Pujan of Brihadeshwar Mahadev - on Dasshera

आश्रम / मिशन समाचार

Vijayadashmi Mahotsav

Aim & Blast the - Evil & Negative

आश्रम / मिशन समाचार

Celebrating Goodness

Denouncing Evil

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Aiming for the Best

आश्रम / मिशन समाचार

Vedanta Ashram Celebrates 28 Years

Vedanta Ashram, Indore

Presents

A Fun & Entertaining Program

Holistic Living - Khel-Khel Mein

on

15th Dec 2023

Living Holistically means to Live Fully & Positively

HL is a Gita based program and has been designed by

Poojya Guruji Sri Swami Atmanandaji

and will be presented by

Maulin Pandya - *a well-known Motivational Speaker*

Time: 7 - 9.00 PM

at

Vedanta Ashram, 2948/E, Sudama Nagar, Indore

आश्रम / मिशन समाचार

श्रीमद् भगवद् गीता
(शांकर भाष्य समेत) नित्य कक्षाएं

प्रतिदिन प्रातः .30 बजे से (मंगल से शनिवार)

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी

श्रीमद् भगवद् गीता
साप्ताहिक कक्षाएं / प्रति शनिवार

प्रति शनिवार सायं 5.00 बजे से

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

पूज्य स्वामिनी अमितानन्दजी

आश्रम / मिशन समाचार

गीता ज्ञान यज्ञ

अध्याय - 1 / अर्जुन विषाद योग

दि. 16 से 21 दिसम्बर 2023;

रामकृष्ण केन्द्र, अहमदाबाद

पूज्य स्वामिनी अमितानन्दजी

गीता ज्ञान यज्ञ

अध्याय - 3 / कर्मयोग

दि. 4 से 8 जनवरी 2024; गोकुल धाम, गोरेगांव

पूज्य स्वामिनी समतानन्दजी

गीता ज्ञान यज्ञ

अध्याय - 13 (क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ विभाग योग) / नाटक दीप

दि. 5 से 12 जनवरी 2024;

आत्म ज्योति आश्रम, बड़ौदा

पूज्य स्वामिनी अमितानन्दजी

Internet News

Talks on (by P. Guruji) :

Audio / Video Pravachans on YouTube Channel

~ Gita Ch. 04 (Camp)

~ Gita Ch. 18 (OI GGY)

~ Tattvabodha (VA Camp)

~ Gita Ch. 06 (MIT)

~ Gita Ch. 12

~ Gita Ch. 17

~ Sadhna Panchakam

~ Drig-Drushya Vivek

~ Upadesh Saar

~ Atma Bodha Pravachan

~ Sundar Kand Pravachan

~ Ekshloki Pravachan

~ Sampoorna Gita Pravachan

~ Kathopanishad Pravachan

~ Shiva Mahimna Pravachan

~ Hanuman Chalisa

~ Laghu Vakya Vrittu (Guj)

~ Gita Ch. 5 (Guj)

Vedanta Ashram YouTube Channel

Vedanta & Dharma Shastra Group

Monthly eZines

Vedanta Sandesh - Nov '23

Vedanta Piyush - Oct '23

Visit us online :
Vedanta Mission

Check out earlier issues of :
Vedanta Piyush

Join us on Facebook :
Vedanta & Dharma Shastra Group

Subscribe to our WhatsApp Channel
Vedanta Ashram Channel

Published by:
Vedanta Ashram, Indore